12

''निकट आ गया!''

बाइबल पाठ #3

II. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले की सेवकाई का आरज़्भ।
   क. यूहन्ना की सेवकाई (मज़ी 3:1-6; मरकुस 1:1-6; लूका 3:1-6)।
   ख. यूहन्ना का संदेश (मज़ी 3:7-12; मर. 1:7, 8; लूका 3:7-18)।

III. यीशु की सेवकाई का आरज़्भ।
   क. यूहन्ना से यरदन नदी में यीशु का बपस्तिमा (मज़ी 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21, 22; यूहन्ना 1:31-34)।
   ख. जंगल में यीशु की परीक्षा हुई (मज़ी 4:1-11; मर. 1:12, 13; लूका 4:1-13)।
   ग. यीशु के विषय में यूहन्ना की गवाही (यूहन्ना 1:19-34)।

परिचय

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ''जब आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा'' तो उसका मुज़्य प्रचार था, ''मन फिराओ ज़्योंकि स्वर्ग का राज्य[1] निकट आ गया है'' (मज़ी 3:1, 2)। हमारे लिए यह कल्पना करना कठिन है कि उसके सुनने वालों के लिए ये शज़्द कितने रोमांचकारी रहे होंगे। मसीहा का युग ''निकट आ गया'' था! मसीहा के सामने आने में अब अधिक समय नहीं रह गया था!

''हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ'' पाठ यीशु के पहले तीस वर्षों अर्थात तैयारी के वर्षों पर केन्द्रित था। अगले पाठ में यीशु के काम के प्रारज़्भिक दिनों को तरतीब दी गई है, जब वह दिखाने लगता है कि वह ही मसीह है। दोनों के बीच में, अन्तिम तैयारी आवश्यक थी। यह अध्ययन उन घटनाओं पर आधारित है, जिनसे यीशु की सार्वजनिक सेवकाई का आधार तैयार हुआ।

मसीहा का पूर्वाभास
(मज़ी 3:1-12; मरकुस 1:1-8; लूका 3:1-18)

भविष्यवज़्ताओं ने पहले ही बता दिया था कि मसीहा से पहले उसका मार्ग तैयार करने के वाला आएगा (यशायाह 40:3-5; मलाकी 3:1; 4:5, 6)। जकर्याह याजक को बताया गया था कि उसका पुत्र, यूहन्ना ही वह मार्ग तैयार करने वाला होगा (लूका 1:17)।

यशायाह ने उस काम की, जिसे यूहन्ना ने करना था, सड़क बनाने वाले व्यक्ति से तुलना की:

> प्रभु का मार्ग तैयार करो,
> उस की सड़कें सीधी बनाओ।
> हर एक घाटी ज़र दी जाएगी,
> और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा;
> और जो टेढ़ा है सीधा, और जो ऊंचा नीचा है
> वह चौरस मार्ग बनेगा
> (लूका 3:4, 5; देखें यशायाह 40:3, 4)।

उस ज़माने में, जब किसी राजा को ऊबड़-खाबड़ रास्ते से जाना होता था, तो उसके आगे सड़क बनाने वाले, भूमि को समतल करके रास्ता साफ़ किया करते थे। इस संदर्भ में भविष्यवक्ता ने इसी उपमा का इस्तेमाल किया था। निश्चय ही, यूहन्ना के काम के सम्बन्ध में, यह भूमि पर पड़े गड्ढों को नहीं, बल्कि अज्ञानता की घाटी को भरना था। चट्टान की पहाड़ियों को नहीं, बल्कि घमण्ड के पहाड़ों को नीचा करना था। मसीहा के सम्बन्ध में टेढ़ी अवधारणाएं सच्चाई की शिक्षा से सीधी की जानी थीं।

कुल मिलाकर, यहूदी लोगों में मसीहा और उसके काम की समझ नहीं थी। उनके विचार से वह एक सांसारिक राजा होना था, जिसने अपने शत्रु का नाश करके उनके देश की पुरानी शान लौटानी थी। यूहन्ना के सामने इस विचार का आरम्भ करने की चुनौती थी कि मसीहा का राज्य *आत्मिक* क्षेत्र होगा, जिसमें *आत्मिक* शर्तें होंगी।

यूहन्ना का प्रचार[2]

यूहन्ना को जब हमने पिछली बार देखा था, तो वह ''जंगलों में'' था (लूका 1:80)।[3] उस जंगली इलाके में, वह कठोर जीवन जी रहा था। वह खुरदरे वस्त्र पहनता था (मत्ती 3:4; देखें 2 राजा 1:8); और टिड्डियां तथा वनमधु खाता था (मत्ती 3:4)।

अन्त में, उसके पास ''परमेश्वर का वचन ... पहुंचा'' (लूका 3:2), जो उसके लिए प्रचार आरम्भ करने का संकेत था। लूका ने पांच राजनैतिक नेताओं[4] और दो धार्मिक अगुओं[5] का इस्तेमाल करके यूहन्ना की सेवकाई के महत्व को रेखांकित किया (लूका 3:1, 3)।

यूहन्ना के प्रचार में ''मन फिराओ'' मुख्य शब्द था (मत्ती 3:2)। ''मन फिराओ'' का अर्थ है ''मन को बदलना, जिससे जीवन भी बदल जाता है।'' मन फिराने की इच्छा न रखने वालों को परमेश्वर के क्रोध का सामना करना पड़ना था (मत्ती 3:7, 10; लूका 3:9)। राज्य किसी विशेष जाति के लोगों के लिए नहीं, बल्कि विशेष नैतिक चरित्र वाले लोगों के लिए था (मत्ती 3:8, 9; लूका 3:8)।

परिवर्तन की आवश्यकता के सम्बन्ध में, यूहन्ना ने सामान्य ढंग से नहीं, बल्कि विशेष तौर पर कहा। उसने लोगों को ''मन फिराव के योग्य फल'' लाने के लिए कहा (मत्ती 3:8;

देखें लूका 3:8)। उसने स्पष्ट उदाहरण दिए। उसने स्वार्थी भीड़ को एक-दूसरे के साथ बांटने (लूका 3:11),[6] सरकारी अधिकारियों को ईमानदार होने (लूका 3:13) और अधिकार वालों को अपनी शज़्ति का दुरुपयोग न करने के लिए कहा (लूका 3:14)। उसने सब लोगों को अपने पापों का अंगीकार करने के लिए कहा (मरकुस 1:5)। ऐसा न करने वालों को उसने ''सांप के बच्चे'' कहा (मज़ी 3:7)। कुछ लोग आज इसे ''घास में सांप'' कहेंगे।

उसकी साहसिकता के बावजूद या शायद इसी कारण, उसके पीछे काफ़ी लोग आ गए। ''और सारे यहूदिया देश के, और यरूशलेम के सब रहने वाले[7] निकलकर उसके पास गए, और अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया''[8] (मरकुस 1:5)।

यूहन्ना का काम

बपतिस्मा यूहन्ना की सेवकाई का अत्यावश्यक भाग था। कुछ लोग यूहन्ना के बपतिस्मे में यहूदियों के पारज़्परिक धोने की बात ढूंढ़ते हैं, परन्तु यूहन्ना का बपतिस्मा विशेष था।[9] यूहन्ना ''बपतिस्मा देने वाला'' के नाम से प्रसिद्ध हो गया था (मज़ी 3:1), ज़्योंकि यह उसका विशेष काम था।[10]

बपतिस्मा के लिए अंग्रेज़ी शज़्द ''बैपटिस्ट'' यूनानी शज़्द का ही रूप है। अन्त के (*-tes*) से संकेत मिलता था कि ''बपतिस्मा देना'' के लिए यूनानी शज़्द में एक विशेष गुण जोड़ दिया गया था। इस अन्त की ''एज़्टर'' और ''डॉज़्टर'' में ''टर'' से तुलना की जा सकती है। ''बैपटिस्ट'' का मूल अर्थ है, ''जो बपतिस्मा देता है।'' इस अवधारणा को व्यज़्त करने वाला शज़्द ''बपतिस्मा देने वाला'' है। इस शृंखला में यूहन्ना के लिए मैं ''बपतिस्मा देने वाला'' शज़्दों का ही इस्तेमाल करूंगा।

यूहन्ना लोगों को यरदन नदी में बपतिस्मा देता था। हर एक तक अपनी आवाज़ पहुंचाने के लिए वह स्पष्टतया नदी के ऊपर की ओर तथा फिर नीचे को आता होगा। लूका 3:3 में ''और वह यरदन के आस-पास के सारे देश में आकर'' है। लिविंग बाइबल में इस वाज़्य को ''फिर यूहन्ना यरदन नदी के दोनों ओर एक से दूसरी जगह गया'' है। हमें उन कई जगहों के बारे में बताया गया था, जहां वह बपतिस्मा देता था (यूहन्ना 1:28; 3:23)।

यूहन्ना डुबकी के द्वारा बपतिस्मा देता था। ''बपतिस्मा देना'' यूनानी शज़्द का हिन्दी रूप है, जिसका अर्थ है, ''गोता लगाना, डुबोना।''[11] यूनानी शज़्द का अर्थ पता न होने के बावजूद हम जान सकते हैं कि यूहन्ना का बपतिस्मा डुबकी से ही होता था। यूहन्ना 3:23 ज़ोर देकर कहता है कि ''यूहन्ना भी शालेम के निकट एलोन में बपतिस्मा देता था। ज़्योंकि वहां बहुत जल था।'' छिड़काव के लिए ''बहुत जल'' की आवश्यकता नहीं होती, परन्तु डुबकी के लिए होती है। यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के बाद मसीह ''पानी से निकलकर ऊपर आया'' (मरकुस 1:10; देखें मज़ी 3:16)। यूहन्ना यदि छिड़काव से बपतिस्मा दे रहा होता, तो उसे भी उसी कारण से पानी में जाने की आवश्यकता नहीं, जिस कारण आज छिड़काव से बपतिस्मा देने वाले पानी में नहीं जाते।

यूहन्ना के बपतिस्मे को ''पापों की क्षमा के लिए मन फिराव का बपतिस्मा'' कहा

जाता था (मरकुस 1:4; लूका 3:3)। इसे ''मन फिराव का बपतिस्मा'' कहा जाता था, ज़्योंकि यह मन फिराव दिखाने के लिए था।[12] यह ''पापों की क्षमा के लिए'' था: ज़्योंकि यूहन्ना लोगों को उनके पापों का दोषी ठहराने के साथ-साथ उन्हें उनके पापों की क्षमा की उज़्मीद भी देता था। उसका बपतिस्मा मनुष्य जाति के पापों के लिए मसीह की मृत्यु का पूर्वाभास था।

यूहन्ना का उद्देश्य

यूहन्ना का मुज़्य उद्देश्य लोगों के मनों और जीवनों को मसीहा के लिए तैयार करना था (देखें यूहन्ना 3:28)। उसने लोगों की भीड़ को बताया, ''मैं तो पानी से तुज़्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शज़्तिशाली है। मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं'' (मज़ी 3:11; यूहन्ना 1:27, 30 भी देखिए)। जूते उठाने का काम एक सेवक का होता था। यूहन्ना वास्तव में यह कह रहा था कि ''मैं उसका दास बनने के भी योग्य नहीं हूं।''

उसने अपने और मसीह के कार्य में अन्तर किया: ''मैं तो पानी से तुज़्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, ... वह तुज़्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा'' (मज़ी 3:11)। संदर्भ से पता चलता है कि पवित्र आत्मा से बपतिस्मा और आग से बपतिस्मा दोनों एक ही नहीं हैं। यूहन्ना मिले-जुले लोगों को सज़्बोधित कर रहा था, जिनमें से कुछ ने तो उसकी बात मान लेनी थी और कुछ ने नहीं (मज़ी 3:5-7)।[13] पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के बाद पहले पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों को मिला था (प्रेरितों 1:5, 8; 2:1-4)। उन्हें आत्मा की सामर्थ में डुबोया गया था। दूसरी ओर, आग का बपतिस्मा न्याय के दिन आग में अधर्मियों के डुबोये जाने की ओर संकेत करता है (मज़ी 3:12)।

मसीहा का बपतिस्मा हुआ (मज़ी 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21, 22; यूहन्ना 1:31-34)

यूहन्ना की प्रसिद्धि के चरम पर और मसीहा के विषय में पूर्वाभास के चरम पर-बपतिस्मा लेने के लिए यीशु उसके पास आया। उस समय, मसीह की उम्र ''लगभग तीस वर्ष'' थी (लूका 3:23)।

हम नहीं जानते कि यूहन्ना ने यीशु को पहले देखा था या नहीं। जैसे कि पहले ध्यान दिलाया गया है, दोनों की माताएं आपस में रिश्तेदार भी थीं और सहेलियां भी।[14] यह सज़्भव है कि यूहन्ना और यीशु पहले भी मिल चुके हों-शायद यरूशलेम में पर्व के दौरान किसी समय। वे पहले मिले थे या नहीं, परन्तु यूहन्ना को किसी प्रकार पता था कि दूसरों के विपरीत तरह यीशु बपतिस्मा लेने की प्रतीक्षा नहीं कर रहा था। यूहन्ना का बपतिस्मा मन फिराव का बपतिस्मा था, और यीशु ने कोई पाप नहीं किया था, जिसके लिए उसे मन

फिराने की आवश्यकता होती। उसका बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए था और यीशु ने कोई पाप नहीं किया था कि उसे क्षमा की आवश्यकता होती। पहले तो यूहन्ना ने मसीह को बपतिस्मा देने से इनकार कर दिया: ''मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है ?'' (मत्ती 3:14)।

यीशु ने तो हमारी तरह कोई पाप नहीं किया था, तो फिर उसने बपतिस्मा ज़्यों *लिया ?* मसीह ने इस प्रश्न का उज़र स्वयं दिया। उसने यूहन्ना से कहा, ''अब तो ऐसा ही होने दे, ज़्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है''[15] (मत्ती 3:15)। यूहन्ना का बपतिस्मा ''स्वर्ग की ओर से'' था (देखें मत्ती 21:25) और यूहन्ना का बपतिस्मा लेने से इनकार करने वालों ने ''परमेश्वर की मंशा को अपने विषय में टाल दिया'' (लूका 7:30)। यीशु परमेश्वर की इच्छा के केन्द्र में रहने को समर्पित था[16]–और वह इस बात को समझता था कि यूहन्ना का बपतिस्मा उस इच्छा का एक भाग था। इसलिए उसके मन में ऐसी कोई उलझन नहीं थी कि उसे ज़्या करना है: उसका बपतिस्मा लेना आवश्यक था और उसने लिया। ज़्या यह अद्‌भुत नहीं होगा कि आज बपतिस्मे के बारे में सब की सोच यीशु की तरह ही सकारात्मक हो ?

यूहन्ना यीशु को बपतिस्मा देने के लिए मान ही गया। जब बपतिस्मा लेकर, मसीह प्रार्थना कर रहा था (लूका 3:21),[17] तो यूहन्ना ने कुछ आश्चर्यजनक बात देखी और सुनी:

> और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं[18] उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुई, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं (मत्ती 3:16, 17)।[19]

इस प्रकार परमेश्वर ने यीशु के तीस या इससे अधिक तैयारी के वर्षों पर स्वीकृति की मोहर लगा दी, और इस प्रकार उसने उसे अपनी सेवकाई के लिए तैयार किया (देखें लूका 4:18; प्रेरितों 10:38)।

हो सकता है कि इस घटना से पहले, यूहन्ना को संदेह हो कि यीशु ही मसीहा है, परन्तु उसे पज़्का *पता* नहीं था। परमेश्वर ने उसे बताया था कि वह मसीहा को कैसे पहचानेगा: ''जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे; वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने वाला है'' (यूहन्ना 1:33)। आकाश से आत्मा को उतरते देखकर यूहन्ना के तो पांव ज़मीन पर नहीं लग रहे होंगे। परमेश्वर ने अपना वचन निभा दिया था! मसीह आ चुका था!

मसीहा की परख हुई
(मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12, 13; लूका 4:1-13)

यीशु के बपतिस्मे के विवरण के तुरन्त बाद, उसकी परीक्षा का वृज़ांत मिलता है। बपतिस्मे का अर्थ परीक्षा खत्म हो जाना नहीं है। बपतिस्मा लेने से शैतान अपने आक्रमण कम नहीं करता, बल्कि, इसके विपरीत वह अपने आक्रमण बढ़ा देता है। सच्चाई यह है कि

हमने बपतिस्मा ले लिया है, का अर्थ *यह है* कि अब हमें उन परीक्षाओं का सामना करने के लिए परमेश्वर की सहायता मिलती है (1 कुरिन्थियों 10:13; इब्रानियों 13:5)।

परीक्षा के और चौंकाने वाले पहलुओं में से एक ''तब उस समय *आत्मा* यीशु को जंगल में *ले गया* कि इब्लीस से उसकी परीक्षा हो'' शब्दों में मिलता है (मत्ती 4:1; देखें लूका 4:1)। परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए यीशु की परख होनी आवश्यक थी।

हम परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरी तरह से कभी समझ नहीं पाएंगे, परन्तु ''परीक्षा'' शब्द से हमें एक संकेत मिल जाता है। यूनानी शब्द के हिन्दी अनुवाद ''परीक्षा'' का अर्थ परखना भी समझा जा सकता है। शैतान के दृष्टिकोण से, जंगल में यीशु का जाना *परीक्षा* का समय था, जिसमें शैतान ने मसीह को पाप करने के लिए उकसाने की परीक्षा ली। (उसके उद्देश्य को नष्ट करने के लिए उससे एक ही बार पाप करवाना काफ़ी था।) परन्तु परमेश्वर के दृष्टिकोण से, चालीस दिन का समय *परख या परीक्षा* का अर्थात यीशु के वास्तविक मूल्य और प्रकृति को साबित करने का था।[20]

नये नियम में तीन परीक्षाएं मिलती हैं।[21] वे मूलत: 1 यूहन्ना 2:16 में दी गई परीक्षा के तीन पहलू हैं: ''अर्थात शरीर की अभिलाषा [भूख मिटाने के लिए पत्थरों को रोटियां बनाना], और आंखों की अभिलाषा [संसार के राज्यों की चमक-दमक] और जीविका का घमण्ड [मन्दिर से छलांग लगाने के बावजूद सुरक्षित रहने पर भीड़ को चकित करना]।''

इब्रानियों की पत्री के लेखक ने कहा है कि यीशु ''सब बातों में हमारी नाईं परखा गया'' (इब्रानियों 4:15क)। मसीह पर वे हज़ारों परीक्षाएं नहीं आईं, जो हम पर आती हैं, परन्तु उसने हम पर आने वाली हर *प्रकार* की परीक्षा सही। मत्ती 4 और लूका 4 अध्याय की परीक्षाएं हम पर आने वाली परीक्षाओं या प्रलोभनों की *बानगी* हैं।

यह विचार ही कि यीशु की परीक्षा हो सकती है, कुछ लोगों को परेशान करता है। कुछ लोग इससे इसलिए परेशान होते हैं, क्योंकि उनके अनुसार, परीक्षा में पड़ने का अर्थ पाप करना होता है। उनका तर्क होता है कि ''जब तक कोई मनुष्य गलती करना नहीं *चाहता,* तब तक वास्तविक परीक्षा नहीं होती।'' इससे कुछ लोग इसलिए परेशान होते हैं, क्योंकि उनके अनुसार यह सज्ज़ावना कि यीशु पाप कर सकता था, चौंकाने वाली है।

परीक्षा के बारे में ऐसी बहुत सी बातें हैं, जिन्हें मैं या आप कभी नहीं समझ सकते; यह यीशु के सज्पूर्ण मनुष्य होने के साथ-साथ सज्पूर्ण परमेश्वर होने के दायरे में आती हैं।[22] तो भी हम इन तीन निष्कर्षों से आश्वस्त हो सकते हैं: (1) यीशु की परीक्षा हो सकती थी। वरना परीक्षा की कहानी में कोई उद्देश्य नहीं होता। मुझे यह समझ आए या न कि यह परीक्षा कैसे हो पाई, परन्तु वचन *कहता है* कि यीशु की परीक्षा हुई। (2) परीक्षा में पड़ना अपने आप में पाप नहीं है। इस वृज़ांत में यह सच्चाई है। परीक्षा में पड़ना नहीं, बल्कि परीक्षा में *हार मान लेना* पाप है। (3) यीशु ने परीक्षा के सामने हार *नहीं* मानी। वह ''सब बातों में हमारी नाईं परखा गया, *तौ ज़ी निष्पाप निकला*'' (इब्रानियों 4:15)।[23] इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें! मसीह ने यदि पाप किया होता, तो वह क्रूस पर ''हमारे लिए पाप'' नहीं बन सकता था, जिससे ''हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं''

(2 कुरिन्थियों 5:21)!

मसीह की परीक्षा के बाद, ''स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे'' (मत्ती 4:11)। परमेश्वर हमें केवल हमारे जीवन में आने वाली परीक्षा के कारण ही नहीं त्याग देता।

मसीहा की घोषणा हुई (यूहन्ना 1:19-34)

परीक्षा के बाद, यीशु उस इलाके में चला गया, जहां यूहन्ना प्रचार कर रहा था (आयतें 26, 29)।

इनकार

स्पष्टतया, यूहन्ना की बढ़ती प्रसिद्धि से यरूशलेम के धार्मिक अगुवे घबरा गए थे। इसलिए फरीसियों ने (यूहन्ना 1:24) इस भविष्यवक्ता से पूछने के लिए याजकों और लेवियों को भेजा। वे जानना चाहते थे कि वह आने वाला मसीहा (ख्रिस्तुस)[24] है या एलिय्याह या ''वह भविष्यवक्ता।'' यूहन्ना ने ज़ोर देकर उज़र दिया, ''नहीं'' (यूहन्ना 1:19-21)।

''मसीह'' शब्द के साथ ''वह भविष्यवक्ता'' शब्द का इस्तेमाल, यहूदी धार्मिक अगुओं की उलझन को दिखाता है। मसीहा की कुछ भविष्यवाणियां उनके अपने बनाए विचारों से मेल नहीं खाती थीं, इसलिए उन्होंने यह निर्णय लिया कि वे आयतें उसी के बारे में होंगी, जिसके लिए मूसा ने कहा था कि मेरे जैसा एक नबी होगा (व्यवस्थाविवरण 18:15)। मूसा के शब्द आने वाले मसीहा के लिए कहे गए थे,[25] परन्तु यहूदी धार्मिक गुरुओं ने एक अलग छद्म व्यक्तित्व बना लिया था, जिसे ''वह भविष्यवक्ता'' कहा जाता था।

यूहन्ना के ज़ोर देकर कहने पर आप चकित हो सकते हैं कि वह एलिय्याह नहीं है (यूहन्ना 1:21)। आखिर उसने अपने सब पूछने वालों से यही कहा था कि वह मसीहा का अग्रदूत है और यशायाह 40:3 से उद्धृत किया था। यशायाह 40:3 की भविष्यवाणी जिसमें मलाकी 3:1 (मरकुस 1:2, 3)[26] जो मसीहा के अग्रदूत के बारे में बताया गया है, जिसे मलाकी ने ''एलिय्याह नबी'' कहा (मलाकी 4:5)। यूहन्ना मलाकी की भविष्यवाणी वाला ''एलिय्याह'' ही था। यीशु ने स्वयं बाद में इस बात की पुष्टि की कि यह सत्य था। उसने कहा, ''एलिय्याह जो आने वाला था, वह यही है'' (मत्ती 11:14; देखें 17:10-13)।

फिर, यूहन्ना ने एलिय्याह होने की बात से इनकार क्यों किया? यहूदियों का विचार था कि एलिय्याह किसी नए शारीर के साथ वापस आएगा।[27] यूहन्ना इस बात से इनकार कर रहा था कि वह देह में एलिय्याह है। वह ''एलिय्याह की *आत्मा और सामर्थ में*'' तो आया (लूका 1:17), परन्तु वास्तव एलिय्याह की आत्मा उसमें नहीं थी।

घोषणा

यूहन्ना द्वारा यरूशलेम से आए लोगों का सामना करने के एक दिन बाद, उसे मसीहा के रूप में यीशु की ओर लोगों का ध्यान दिलाने का पहली बार मौका मिला। ''... उसने

यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेज़्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29)।

ध्यान दें कि यूहन्ना ने यीशु का परिचय, ''हमारे शत्रुओं को हराने वाले सैनिक विजेता'' के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर के मेमने के रूप में कराया, ''जो जगत का पाप उठा ले जाता है!'' यीशु जीवन का उज़म मार्ग सिखाने के लिए अर्थात एक नमूना देने के लिए आया कि हमारा जीवन कैसा होना चाहिए; परन्तु, पहले और सबसे पहले वह हमारे पापों के निमिज़ मरने के लिए आया (देखें लूका 19:10)। मेमने शिक्षा के लिए नहीं होते थे। पाप के साथ उनका सज़्बन्ध वेदी पर उनकी बलि देने में था। यीशु हमारा फसह का मेमना (1 कुरिन्थियों 5:7), बल्कि ''निर्दोष और निष्कलंक मेमना'' है (1 परसत 1:19)।

यूहन्ना ने समझाया कि उसे कैसे पता चला कि यीशु ही मसीह है (यूहन्ना 1:31-33)। उसने निष्कर्ष निकाला, ''और मैं ने देखा, और गवाही दी है, कि यही परमेश्वर का पुत्र है'' (यूहन्ना 1:34)।

सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, यूहन्ना का काम पूरा हो चुका था, बेशक कुछ और महीने उसने शिक्षा और बपतिस्मा देते रहना था।[28] उसने अपने लिए परमेश्वर का उद्देश्य वफ़ादारी से पूरा किया था। कोई भी दूसरा व्यज़्ति इससे अधिक नहीं कर सकता था।

सारांश

यीशु के काम के लिए पूरी तैयारी हो चुकी थी। ''सब बातों का पहली बार'' पाठ में, हम यीशु की सार्वजनिक सेवकाई का आरज़्भ देखेंगे।

यीशु की तैयारी का अनिवार्य भाग उसका बपतिस्मा था। यदि आपको प्रभु की सेवा करनी हो, तो आप के लिए पहले विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा उसकी सन्तान बनना आवश्यक है (गलातियों 3:26, 27)। यीशु बपतिस्मा लेने के लिए सज़र से अस्सी मील तक चलकर गया।[29] आशा है कि आप इसी समय बपतिस्मा लेने के लिए, चलकर, भागकर या गाड़ी में बैठकर जाने को तैयार हैं![30]

टिप्पणियां

[1]वाज़्यांश के अर्थ की चर्चा करें, इस पुस्तक में आगे ''स्वर्ग का राज्य'' पाठ देखें। [2]यूहन्ना के काम के महत्व पर बहुत ज्यादा बल नहीं दिया जा सकता था। मरकुस ने इसे ''सुसमाचार का आरज़्भ'' कहा (मरकुस 1:1)। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, यीशु की सेवकाई का औपचारिक आरज़्भ यूहन्ना का बपतिस्मा लेने से बताया जाता है (प्रेरितों 1:21, 22; देखें प्रेरितों 10:37, 38)। [3]यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले पर चर्चा के लिए इस पुस्तक के पहले एक पाठ ''मसीह आ रहा है'' में देखें। [4]पांच राजनैतिक अगुओं की पृष्ठभूमि जानने के लिए इस पुस्तक में पहले एक पाठ ''संसार जिसमें मसीह आया'' देखें। [5]दो धार्मिक अगुओं की पृष्ठभूमि जानने के लिए इस पुस्तक में आया पहला एक पाठ ''संसार जिसमें मसीह आया'' देखें। [6]यह एक व्यावहारिक भाग है। आप यहां विचारों को विस्तार दे सकते हैं। [7]इस वाज़्य में ''सारे या सब'' का दो बार इस्तेमाल बहुत संज़्या का संकेत देने के लिए प्रतीकात्मक भाषा है। [8]यूहन्ना के बपतिस्मे और ग्रेट

कमीशन के बपतिस्मे (जिसकी आज्ञा स्वर्ग पर उठाए जाने से पहले यीशु ने दी, में कई समानताएं बनाई जा सकती हैं [मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16])। एक यह है कि यूहन्ना का बपतिस्मा लेने वालों के लिए अपने पापों का अंगीकार करना आवश्यक है, जबकि ग्रेट कमीशन के अनुसार मसीह का बपतिस्मा लेने के लिए आने वालों को यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करना होता है (प्रेरितों 8:35-38; रोमियों 10:9, 10)। [9]यूहन्ना के बपतिस्मे और औपचारिक रूप से धोने में उद्देश्य और उसके लेने में अन्तर समेत कई भिन्नताएं हैं। [10]यदि दूसरे बहुत से लोग इसी प्रकार का बपतिस्मा ले रहे थे, जैसा कई बार दावा किया जाता है, तो यूहन्ना को इतना अलग पद कभी न मिलता।

[11]द *अनैलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सैमूअल बैगस्टर एण्ड सन्ज़ लि., 1971), 65. [12]ग्रेट कमीशन के बपतिस्मे को ''विश्वास का बपतिस्मा'' कहा जा सकता है, क्योंकि यह हमारे विश्वास को प्रकट करना है। [13]मरकुस, जिसने उसकी बात न मानने वालों का उल्लेख नहीं किया था, ने केवल पवित्र आत्मा से बपतिस्मे की बात कही (मरकुस 1:8)। यूहन्ना ने भी पवित्र आत्मा से बपतिस्मे की बात ही कही (यूहन्ना 1:33)। दूसरी ओर, मत्ती की तरह, लूका ने मिले जुले श्रोता दिखाए (लूका 3:7) और पवित्र आत्मा से बपतिस्मे और आग से बपतिस्मे दोनों की बात की (लूका 3:16)। [14]इस पुस्तक में पहले एक पाठ ''परमेश्वर ने मरियम को क्यों चुना'' में, मरियम और इलिशबा पर चर्चा देखें। [15]भजन लिखने वाले ने कहा है कि परमेश्वर की सब आज्ञाएं धर्ममय हैं (भजन संहिता 119:172)। [16]इस पुस्तक में अगले एक पाठ ''यीशु की परीक्षा'' में इस सच्चाई पर ज़ोर दिया गया है। [17]लूका की पुस्तक हमें बताती है कि यीशु ने अपने जीवन के कठिन क्षणों में प्रार्थना की (देखें 6:12, 13; 9:28, 29; 22:44, 45; 23:33, 34, 46)। [18]परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक ने यह नहीं कहा कि पवित्र आत्मा कबूतर था, बल्कि यह कहा कि जैसे कबूतर उतरता है वैसे वह उतरा। [19]परमेश्वरत्व में तीन व्यक्तियों पर चर्चा करने के लिए यह आयत बहुत अच्छी है, क्योंकि उस अवसर पर, तीन अलग-अलग स्थानों में तीन व्यक्ति थे, जिनमें से हर एक कुछ न कुछ कर रहा था। परमेश्वर के तीन-में-एक पहलू का काफी महत्व है, जो हमें समझ नहीं आता, परन्तु हम विश्वास से इसे मानते हैं, क्योंकि बाइबल इसे सिखाती है। [20]यह ज़ोर दिया जाना चाहिए कि टैस्ट करना/साबित करना परमेश्वर के लाभ के लिए नहीं, बल्कि हमारे लिए था। परमेश्वर को नहीं बल्कि हमें प्रमाण की आवश्यकता थी। इसलिए उस घटना की बातें हमारे लिए लिखी गई थीं।

[21]लूका 4:2 के शब्दों से सुझाव मिलता है कि यीशु की परख चालीस दिन तक होती रही। जिन तीन परीक्षाओं का वर्णन मिलता है, वे उसके द्वारा सही जाने वाली सभी परीक्षाओं का चरम हैं। मत्ती एक क्रम में और लूका दूसरे में इन परीक्षाओं का वर्णन करता है। बहुत से टीकाकारों का क्रम अधिक क्रमबद्ध लगता है, और इसी क्रम का इस्तेमाल इस पुस्तक में आए पहले एक पाठ ''यीशु की परीक्षा'' में किया गया है। घटनाओं को क्रमबद्ध ढंग से देने की कोई आवश्यकता नहीं। [22]यीशु की परीक्षा कैसे हुई, पर कई चर्चाएं हमारे शारीरिक सोच के लिए घातक हो सकती हैं। [23]यीशु के पाप रहित होने पर, देखें यूहन्ना 8:46; इब्रानियों 7:26; 1 पतरस 1:19; 1 यूहन्ना 3:5. [24]इस सभा ने वास्तव में यह प्रश्न कि ''क्या तू मसीह है?'' पूछा या नहीं, हम नहीं जानते, परन्तु यूहन्ना ने समझ लिया कि वे यही जानना चाहते थे। [25]यह भविष्यवाणी यीशु में पूरी हुई (प्रेरितों 3:20, 22)। [26]यद्यपि हिन्दी और अंग्रेज़ी अनुवाद NASB में मरकुस 1:2, 3 में केवल यशायाह का ही उल्लेख है, परन्तु ये भविष्यवाणियां मलाकी और यशायाह दोनों से हैं। कुछ अनुवादों में अधिक सामान्य वाक्य मिलता है: ''जैसे भविष्यवक्ताओं में लिखा गया है। ...'' (देखें KJV)। [27]आज बहुत से यहूदी एलिय्याह के शरीर में लौटने की राह देख रहे हैं। [28]उसकी सेवकाई और यीशु की सेवकाई कुछ ही महीनों का आगे-पीछे है, उस समय, यूहन्ना का काम घट रहा था और यीशु का बढ़ रहा था (देखें यूहन्ना 3:22-4:2)। [29]यीशु कितनी दूर चला, यह इस पर निर्भर है कि यीशु के बपतिस्मा लेने के लिए आने के समय यूहन्ना कहां था। [30]एक और प्रासंगिकता बनाई जा सकती है: ''किए जाने वाले महत्वपूर्ण काम के पूर्वाभास में आवश्यक तैयारी पर यह एक सबक है। यदि आप उत्साह से काम आरम्भ करने वाले हैं परन्तु कभी-कभी उसे पूरा करते हुए असफल हो जाते हैं, तो मुझे आशा है कि इस पाठ से आपको काम पूरा करने के लिए प्रोत्साहन मिला है।''